بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in

03.03.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

# हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में क़ुर्आन करीम की श्रेष्टता, महत्ता, स्तर एवं महानता का बयान।

## बंगला देश, पाकिस्तान, बर्कीना फ़ासो तथा अल-जज़ायर के अहमदियों के लिए दुआ की तहरीक

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिरिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 03 मार्च 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने क़ुर्आन करीम के जो ब्रह्मज्ञान हमें प्रदान किए हैं अथवा अपनी पुस्तकों तथा कथनों में इस ब्रह्मज्ञान को समझने तथा इसके अनुसार अमल करने के तरीक़े बयान फ़रमाए हैं, वे मैंने पिछले ख़ुत्बों में कुछ बयान किए हैं। क़ुर्आन करीम जो मअरफ़त का खज़ाना हमें देता है, वास्तव में यही है जो बन्दे को ख़ुदा से मिलाता है। इसके अतिरिक्त ख़ुदा को पाने का कोई तरीक़ा नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलै. अपनी एक काव्य पंक्ति में फ़रमाते हैं-

**क़ुर्आं ख़ुदा नुमा है ख़ुदा का कलाम है। बे इसके मअरफ़त का चमन नातमाम है।।**

अतएव यह वह विचार बिन्दु है जिसे हमें सदैव अपने सम्मुख रखना चाहिए। यदि हम ख़ुदा तआला की निकटता तथा उसकी ख़ुशी चाहते हैं, यदि अपनी दुनिया एवं आख़िरत संवारना चाहते हैं तो हमें ये बातें याद रखनी चाहिएँ। यह बात भी सम्मुख रखनी चाहिए कि क़ुर्आन के ब्रह्मज्ञान से लाभ प्राप्त करने के लिए भी ख़ुदा तआला के भेजे हुए मार्ग-दर्शक की आवश्यकता है जो इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक हज़रत मसीह मौऊद अलै. हैं। आप अलै. ने क़ुर्आन करीम के विभिन्न आयामों पर जस गहराई से रोशनी डाली है तथा उसके सौन्द्रय से अवगत कराया है, उस हवाले से गत दो ख़ुत्बों में मैंने कुछ बयान किया था। यह सिलसिला अभी जारी है तथा इसके बारे में पर्याप्त सामग्री अभी बयान करने वाली है। आज भी इस श्रंखला को जारी रखते हुए मैं हज़रत मसीह मौऊद अलै. के कथनों के प्रकाश में क़ुर्आन करीम की विशेषताएँ, स्तर तथा महत्त्व का वर्णन करूँगा।

इस बात की व्याख्या में कि क़ुर्आन ख़ुदा का कलाम है लाला भीम सैन के नाम एक पत्र में आप अलै. फ़रमाते हैं कि अभी थोड़े दिन की बात है कि लेखराम नामक एक ब्रह्मण जो कि आर्य था, क़ादियान में मेरे पास आया और कहा कि वेद ख़ुदा का कलाम है। आप अलै. फ़रमाते हैं कि मैं क़ुर्आन करीम को ख़ुदा का

कलाम जानता हूँ क्यूँकि न इसमें शिर्क की शिक्षा है तथा न ही कोई अन्य अपवित्र शिक्षा है। इसके अुनकरण से जीवित ख़ुदा का चेहरा नज़र आ जाता है तथा चमत्कार प्रकट होते हैं। अतः ख़ुदा तआला के कलाम होने की शर्त यह है कि वह शिर्क से पाक हो तथा उसके अनुसार अमल करने से ख़ुदा तआला का चेहरा नज़र आए।

क़ुर्आन करीम ने ख़ुदा का चेहरा दिखाने में किस प्रकार अपनी भूमिका निभाई इस बात को सहाबियों के जीवन में देखा जा सकता है। सहाबियों के जीवन में क़ुर्आन की शिक्षाओं का प्रभाव बयान करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़माना जो इस्लाम की प्रधानता का युग था, उस ज़माने पर विस्तार पूर्वक दृष्टि डाल कर साबित होता है कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा ने क्यूँकर ईमान लाने वालों को .... नीचले स्तर से उच्च स्तर तक पहुंचा दिया .... ख़ुदा ने एक शुद्ध आत्मा के द्वारा उनका समर्थन किया। वे .... न केवल उस स्तर पर रहे कि अपनी त्रूटियों तथा गुनाहों को अनुभव करते हों तथा उनकी दुर्गगन्ध से घृणा करते हों बल्कि अब वे नेकी की ओर इतना अधिक क़दम उठाने लगे कि .... न केवल दुर्बलताएँ दूर कीं बल्कि नेकियों पर क़दम बढ़त गए .... उन्होंने ख़ुदा को प्रसन्न करने के लिए उन संघर्षों को अपनाया जिनसे बढ़ कर इंसान के लिए सोचा नहीं जा सकता। उन्होंने ख़ुदा की राह में अपने प्राणों को सूखी हुई घास इत्यादि की भांति भी महत्त्व नहीं दिया, अन्ततः वे क़बूल किए गए तथा ख़ुदा ने उनके दिलों को गुनाह से पूर्णतः घृणित कर दिया तथा नेकी की मुहब्बत डाल दी। अतः यह है क़ुर्आन करीम का उन पर प्रभाव कि वे धरती से उठे और आसमान के चमकदार सितारे बन गए, जिनके बारे में सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनमें से हर एक तुम्हारे लिए मार्ग-दर्शक है।

क़ुर्आन करीम के अनुकरण से इंसान ख़ुदा तआला के गुणों का प्रदर्शक हो जाता है, इस हवाले से आप अलै. फ़रमाते हैं- जो व्यक्ति क़ुर्आन शरीफ़ का अनुसरण करके मुहब्बत और सच्चाई को चरम सीमा तक पहुंचा देता है वह छवि के रूप में ख़ुदा के गुणों का प्रदर्शक हो जाता है। यह सब परिणाम उस सार्वभौम शक्ति एवं विशेषता का होता है जो ख़ुदा के कलाम क़ुर्आन शरीफ़ में हम अध्ययन करते हैं। फ़रमाया- मैंने क़ुर्आन करीम में एक महान शक्ति पाई है, मैंने सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण में एक अद्भुत विशेषता देखी है तथा वह यह कि सच्चा अनुकरण करने वाला इसका वलियों के स्तर तक पहुंच जाता है।

क़ुर्आन करीम की विशेषताएँ बयान करते हुए आप अलै. फ़रमाते हैं- क़ुर्आन करीम की चार चमत्कारी विशेषताएँ हैं। पहली विशेषता क़ुर्आन करीम की सुगम एवं साहित्यिक भाषा है जो इंसान की साहित्यिक एवं सुगम भाषा से पूर्णतः भिन्न है। दूसरी चमत्कारी विशेषता यह है कि जितनी उसने कहानियाँ बयान की हैं, मूलतः वे भविष्य वाणियाँ हैं। तीसरी चमत्कारी विशेषता यह है कि क़ुर्आन करीम की शिक्षा इंसान की प्रकृति को उसके कमाल तक पहुंचाने के लिए पूरे पूरे साधन अपने अन्दर रखती है। चौथी बड़ी चमत्कारी विशेषता यह है कि वह सम्पूर्ण अनुकरण करने वाले को ख़ुदा तआला के इतना निकट कर देता है कि वह अल्लाह से बात करने का सौभाग्य प्राप्त कर लेता है तथा खुले खुले निशान उससे प्रकट होते हैं। फ़रमाया- क़ुर्आन करीम एक ऐसी किताब है जिसके अनुसरण के परिणाम स्वरूप दुआएँ क़बूल होती हैं।

क़ुर्आन करीम के चमत्कारी प्रभाव में से एक यह भी है कि उसका सम्पूर्ण अनुसरण करने वाले क़बूलियत का स्तर पाते हैं तथा उनकी दुआएँ क़बूल होकर ख़ुदा तआला अपने भव्य एवं आनन्द दायक

कलाम के माध्यम से उनको सूचना भी देता है तथा विशेषतः दुश्मनों के मुक़ाबले में उनकी सहायता भी करता है।

क़ुर्आन करीम के प्रभाव के सम्बंध में हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं- ख़ुदा की महानता एवं उसकी नाराज़गी के भय वाला विश्वास चाहिए जो मूर्छा के पर्दों को टुकड़े टुकड़े कर दे तथा शरीर पर एक कंपन डाल दे तथा मृत्यु को निकट करके दिखलावे तथा उसकी नाराज़गी का ऐसा भय दिल पर ग़ालिब करे जिससे नफ़्से अम्मारा (तामसिक वृत्ति) के समस्त आवेश टूट जावें तथा इंसान एक गुप्त हाथ से ख़ुदा की ओर खींचा जाए तथा उसका दिल इस विश्वास से भर जाए कि वास्तव में ख़ुदा मौजूद है जो निर्भय दोषी को दंड रहित नहीं छोड़ता। मैं हर एक पर यह बात स्पष्ट करता हूँ कि वह किताब जो इन आवश्यकताओं को पूरा करती है, क़ुर्आन मजीद है। क़ुर्आन का अनुसरण करने वाले इंसान को ख़ुदा स्वयं को दिखा देता है तथा दिव्य संसार की उसको सैर कराता है तथा अपने अनलमौजूद होने की आवाज़ से आप अपने अस्तित्व की उसको सूचना देता है।

इस बात को बयान करते हुए कि क़ुर्आन शरीफ़ शिर्क से मुक्ति का माध्यम है, आप अलै. फ़रमाते हैं- जो कुछ क़ुर्आन करीम ने ताहीद का बीज अरब देश, फ़ारस, मिस्र, शाम, हिन्द, चीन, अफ़ग़ानिस्तान, कशमीर इत्यादि के देशों में बो दिया है तथा अधिकांश देशों से शिर्क तथा प्राणियों की उपासना का बीज जड़ से उखाड़ दिया है। यह एक ऐसी कारवाई है जिसका उदाहरण किसी ज़माने में नहीं पाया जाता।

क़ुर्आन करीम की शिक्षा उच्चतम श्रेणी की शिक्षा है, इस हवाले से आप अलै. फ़रमाते हैं- वह किताब जो इत्यंत गहन अंधकार के समय अवतरित हुई उसके लिए अत्यधिक उत्तम शिक्षा की आवश्यकता थी। वह किताब जो उन लोगों के सुधार के लिए आई जिनके दिलों में बुरी आस्थाएँ जड़ पकड़ चुकी थीं तथा बुरे कर्म एक आदत के समान हो गए थे।

क़ुर्आन करीम के विश्वव्यापी किताब होने के बारे में आप अलै. ने फ़रमाया कि जब इंसान ने दुनिया की आबादी में प्रगति की तथा मिलने जुलने के लिए राहें खुल गईं तथा एक देश के लोगों को दूसरे देश के लोगों के साथ मेल जोल के साधन मिल गए तथा इस बात का पता चल गया कि अमुक अमुक धरती के भाग पर मानव रहते हैं और ख़ुदा तआला का इरादा हुआ कि उनको दोबारा एक क़ौम की तरह बना दिया जाए तथा मतभेद के बाद उनको जमा किया जावे, तब ख़ुदा ने समस्त लोगों के लिए एक किताब भेजी।

हज़रत मसीह मौऊद अलहिस्सलाम ने क़ुर्आन करीम के अवतरण के बारे चार मुख्य कारण बयान फ़रमाए हैं, ये कौन कौनसे कारण हैं। पहली इल्लत फ़ाइली अर्थात इसको करने वाला कौन है तथा इसके कारण क्या हैं। दूसरी इल्लते सरी अर्थात अभिव्यक्त एवं अमली कारण इसके क्या हैं। इल्लते मादी अर्थात इसका भौतिक लाभ क्या है। इल्लते ग़ाई अर्थात इन सबका मूल कारण तथा उद्देश्य क्या है। इल्लते फ़ाईली के विषय में फ़रमाया- الٓمّٓ۔ اَنَا اللّٰہُ اَعۡلَمُ अर्थात मैं ख़ुदा सर्वाधिक ज्ञान रखने वाला हूँ।

इल्लते मादी- ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ अर्थात यह किताब ख़ुदा तआला की ओर आई है जो सबसे अधिक ज्ञान रखता है, इसके अनुसार काम करके वास्तविक लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं। इल्लते सरी- لَا رَيۡبَ ۛ فِيۡهِ है अर्थात इस किताब की विशेषता एवं कमाल यह है कि इसमें किसी प्रकार की शंका एवं सन्देह ही नहीं है, जो बात है वह सुदृढ़ एवं जो दावा है वह सर्वथा प्रमाण तथा रौशन है। इस किताब की इल्लते ग़ाई- هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ है अर्थात इस किताब का मूल उद्देश्य यह है कि मुत्तक़ियों को हिदायत करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आजकल के तथाकथित विद्वानों ने क़ुर्आन की अद्वित्तीय शिक्षा को ऐसे रंग में पेश किया है कि विरोधियों को इस पर उलटी आपत्ति करने का अवसर मिल गया है। आज यह हम अहमदियों का काम है कि अपने अन्दर तक़वा पैदा करते हुए इस शिक्षा की विशेषताओं को अपनी कथनी करनी से साबित करं, दुनिया को बताएँ कि क़ुर्आन करीम ही समस्त रोगों का उपचार है। अल्लाह तआला हमें तक़्वा पर चलते हुए इसके अनुसार कर्म करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने बंगला देश, पाकिस्तान, बर्कीना फ़ासो तथा अल-जज़ायर के अहमदियों के लिए दुआ की प्रेरणा दी, हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया-

अब मैं दुआ की तहरीक भी करना चाहता हूँ। बंगला देश में आजकल जलसा सालाना हो रहा है, आज ही उनका पहला दिन था परन्तु वहाँ विरोधियों ने जलसा गाह पर हमला किया, कई लोग घायल भी हुए हैं। अभी तक जो सूचना मिली है उसके अनुसार उन्होंने कुछ इस प्रकार हमला किया कि कुछ लोग को चोट भी आई है फिर उस इलाक़े में अहमदियों के घरों को भी जला रहे हैं। अभी पूरा अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि कितनी हानि हुई है। अल्लाह तआला अहमदियों को इनके उपद्रव से सुरक्षित रखे तथा इनके पकड़ के भी सामान करे। इनके लिए कोई हिदायत की दुआ तो नहीं हो सकती- اَللّٰهُمَّ مَزِّقْهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ وَسَحِّقْهُمْ تَسْحِيْقًا की दुआ ही जो मुंह से निकलती है, दिल से निकलती है।

इसी तरह पाकिस्तान के हालात के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला वहाँ भी अहमदियों के हालात ठीक रखे। बर्कीना फ़ासो में भी अभी आशंकाएँ मंडरा रही हैं, वहाँ के लिए दुआ करें। इसी तरह अल-जज़ायर में भी अहमदियों पर कुछ मुक़दमे चल रहे हैं, उनके लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला हर जगह अहमदियों को सुरक्षा में रखे।

बंगला देश में जैसा कि मैंने कहा प्रशासन ने हमें यही कहा था कि चिंता न करो, जलसा करो और हम पूरी सुरक्षा करेंगे किन्तु जब बुलवाई तथा आतंकवादी एवं कट्टर पंथी मुल्ला अपने टोलों को लेकर आए तो वहाँ खड़ी पुलिस तमाशाई बन कर बैठी हुई है और कोई काम नहीं कर रही। अतएव हमे अल्लाह की ओर झुकना चाहिए, अल्लाह तआला से दुआ मांगनी चाहिए, अल्लाह तआला हमारे इन भाईयों की कठिनाईयों को जल्दी दूर फ़रमाए, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

**हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652**

**अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131**